SET - IV

समय : तीन घंटे

पूर्णांक – 100

सामान्य-निर्देशः

I. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

II. प्रश्न के विविध भागों के उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखें।

III. प्रश्नों के सामने दर्शाये गये अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।

खंड- 'क'

प्र. 1 अधोलिखित काव्यांश को पढ़कर इससे जुड़े प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को किन-किन से आबाद करूँ मैं।
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से अपने दिन बर्बाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर, मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे अपने को आजाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं।

(क) कवि क्यों कहता है-'क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं'? 2

(ख) 'उन्मादों के क्षण' 'अवसादों के क्षण'-इन प्रयोगों के आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) सुखों की याद आँसू लाती है क्यों? 2

(घ) 'सुधियों' के बंधन से कैसे अपने को आजाद करूँ मैं- इस पंक्ति का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए। 2

(ङ) 'दोष किसे दूँ' कहता हुआ कवि ने किन भावों की अभिव्यक्ति करता है' 2

उत्तर (क) जीवन में जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं, स्मृतियाँ संचित होती चली जाती हैं। वहुत सारे प्रिय -अप्रिय प्रसंग यादों के खजाने में होते हैं। कवि इनसे संबंधित प्रश्न हमारे सामने रखता है- क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं? भूलना संभव नहीं लेकिन याद करना हमेशा और क्या हमेशा सुखद नहीं होता।

स्मृतियों का अपना घेरा होता है। कवि जैसे यह तय नहीं कर पाता कि वह क्या भूलूँ और क्या याद करे।

(ख) जीवन कई घटनाओं से गुजरता हुआ आगे बढ़ता गया। सुख भी मिले, दुःख भी। 'उन्मादों के क्षण' अर्थात ऐसे क्षण जिनमें खुशियों का उन्माद भरा पड़ा हो। 'अवसादों' के क्षण' कहते हुए कवि ने दुःख की घड़ियों की ओर संकेत किया है। जीवन में खुशियों के पल भी आते हैं, दुःखों के पल भी। स्मृति में संचित इन्ही क्षणों की ओर संकेत करते हुए कवि ने कहा है- अगणित उन्मादों और अवसादों के क्षण हैं।

(ग) सुखों की याद आँसू लाती है। याद का संवंध उससे है, जो बीत चुका है। जो

Scanned with CamScanner

अच्छा और सुखद घटित हो चुका है और अब नहीं है, हम चाहते हैं कि वह फिर हो। हम सुख के पल फिर जीना चाहते हैं जबकि यह असंभव है। इसलिए सुखों की याद आँखें नम करती है।

(घ) सुधियों का बंधन यादों का, स्मृतियों का बंधन है। स्मृतियों से आजाद होना असंभव है। यह हमारी आंतरिक संपन्नता है, समृद्धि है, हमारी संवेदनाओं का इतिहास है। इसी से हम बने हैं। इससे मुक्ति अपेक्षित भी नहीं है। कवि कहता है- भूलने के प्रयास करके, फिर याद करके, दोनों स्थितियों में मैं दुःख का अनुभव करता हूँ। इसी बेचैनी की अवस्था में उसका प्रश्न है कि सुधियों के बंधन से स्वयं को आजाद कैसे किया जाए।

(ङ) स्मृतियों में डूब कर निष्क्रिय होना अच्छा नहीं। कवि को लगता है कि स्मृतियों में डूब कर वह स्वयं अपने दिन बर्बाद कर रहा है। वह अपने समय का सही उपयोग नहीं कर पा रहा। ऐसी स्थिति में किसी और को दोष नहीं दे सकता। स्मृतियों के खजाने का सकरात्मक उपयोग अपेक्षित है। यदि हम ऐसा नहीं करते तो किसी को दोष देना हमारे लिए अनुचित है।

प्र. 2 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मेरी दृष्टि में ईश्वर सत्य और प्रेम हैं, ईश्वर नीति और सदाचार हैं, ईश्वर अभय है। ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है, फिर भी इन सबसे ऊपर और परे है। ईश्वर अन्तरात्मा है। वह नास्तिक की नास्तिकता भी है, क्योंकि अपने निःसीम प्रेम के कारण वह उसे भी रहने देता है। वह हृदयों की जाँच करता है। वह वाणी और बुद्धि से परे है। वह हमें और हमारे हृदयों को खुद हमसे भी अधिक जानता है। वह जो कुछ हम कहते हैं उसकी को नहीं मान लेता, क्योंकि उसे मालूम है कि हममें से कुछ जान-बूझकर और दूसरे अनजाने अक्सर जो कहते हैं वह करते नहीं। जिन्हें उसके व्यक्तिगत अस्तित्व की जरूरत है, उनके लिए वह व्यक्ति रूप है। जिन्हें उसके स्पर्श की आवश्यकता है, उनके लिए वह साकार है। वह शुद्धतम सार है। जिनमें श्रद्धा है उनके लिए वह केवल सत्स्वरूप है। वह सब मनुष्यों के लिए प्रत्येक की भावना के अनुसार सब कुछ है। वह हमारे भीतर है और फिर भी हमसे ऊपर और परे है। कोई कांग्रेस मे से ईश्वर शब्द को निकाल सकता है, परन्तु स्वयं ईश्वर को निकाल देने की शक्ति किसी में नहीं है। ईश्वर के नाम पर कहना और शपथपूर्वक कहना, इन दोनों में क्या फर्क है? और जिसे conscience (सद्सद-विवेक की सहज शक्ति) कहा जाता है, वह सरल तीन अक्षरों के समूह 'ईश्वर' शब्द का ही खींच-तानकर किया गया किन्तु अपूर्ण अर्थ है। अगर उसके नाम पर वीभत्स दुराचार या अमानुषिक अत्याचार किए जाते हैं, तो इससे ईश्वर का अस्तितव मिट नहीं सकता। वह बड़ा सहनशील है। वह धैर्यवान है, परन्तु भयंकर भी है। वह इस लोक में और परलोक में सबसे कठोर व्यक्ति है। वह हमारे साथ वही बर्ताव करता है, जो हम अपने मनुष्य और पशु पड़ोसियों के साथ करते हैं। उसके सामने अज्ञान का बहाना नहीं चल सकता। पर साथ ही वह क्षमाशील है क्योंकि वह हमें पश्चात्ताप का हमेशा मौका देता है।

(क) ईश्वर को सत्य, प्रेम, नीति और सदाचार कहने के बाद अभय क्यों कहा गया हैं?2

(ख) 'ईश्वर नास्तिक की नास्तिकता भी है'- ऐसा कहना कहाँ तक सार्थक है? 2

(ग) 'ईश्वर वाणी और बुद्धि से परे है'- इस कथन का विश्लेशण कीजिए। 2

(घ) ईश्वर सब मनुष्यों के लिए प्रत्येक की भावना के अनुसार सबकुछ है।

Scanned with CamScanner

कैसे? 2

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है? 2

उत्तर (क) लेखक ने ईश्वर को सत्य, प्रेम, नीति और सदाचार कहा है। इसके बाद उसने ईश्वर को अभय कहा है। इसका कारण यह है कि ईश्वर यदि सत्य, प्रेम, नीति और सदाचार है तो भय का कोई कारण नहीं। सत्य-पथ पर चलनेवाले व्यक्ति के लिए, सबके प्रति प्रेम-भाव रखनेवाले और नीति और सदाचार का पालन करनेवाले व्यक्ति के लिए भय का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। उसे अभय अपने अच्छे कर्मों के परिणाम-रूप में प्राप्त होता है।

(ख) ईश्वर सबका है। उसका तो वह है जिसकी उसपर आस्था है, उसका भी है जिसका उस पर विश्वास नहीं है। वह सब का ध्यान रखता है। अत: ईश्वर नास्तिक की नास्किता भी है। उसका प्रेम सीमाबद्ध नहीं है। ऐसा नहीं है कि उसका प्रेम इसके प्रति हो और उसके प्रति न हो। उसका प्रेम नि:सीम है। सबके लिए है। इसलिए लेखक ने कहा है कि यह नास्तिकों की नास्तिकता भी है।

(ग) ईश्वर वाणी और बुद्धि से परे है। हमारी भाषा में हमारी वाणी में वह शक्ति नहीं है कि हम उस पर अवर्णनीय का वर्णन कर सकें। हमारी वाणी की क्षमता की सीमा है। हमारी समझ की भी सीमा है। सबकुछ समझ लेना हमारे वश की बात नहीं। इसलिए लेखक ने कहा है कि ईश्वर वाणी और बुद्धि से परे है।

(घ) ईश्वर सबके लिए है। सब की भावना और कल्पना के अनुरूप है। जिसकी जितनी समझ है, ईश्वर उसे उतना ही समझ में आता है। ईश्वर सब की भावना के अनुरूप सब कुछ है। इसलिए यह कहना संभव और उचित नहीं कि ईश्वर ऐसा है या वैसा है। ईश्वर वैसा ही है जैसा हमारी परिकल्पना में है।

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा- 'ईश्वर'।

खंड - 'ख'

प्र. 3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- **5**

(क) किसी ऐतिहासिक स्थल की यात्रा

(ख) आज की शिक्षा व्यवस्था : कितनी कारगर

(ग) दूरदर्शन के लाभ और हानियाँ

उत्तर (ग) दूरदर्शन के लाभ और हानियाँ

दूरदर्शन विज्ञान के अद्भुत आविष्कारों में प्रमुख आविष्कार है, जिसके माध्यम से दूरदराज की गतिविधियाँ, ध्वनि और चित्र सहित दर्शक तक पहुँच जाती है। रेडियो की अपेक्षा दूरदर्शन का प्रभाव ज्यादा स्थायी होता है। यह मनोरंजनपूर्ण शिक्षा देने का सर्वोत्तम उपाय होता है। इसी वजह से दूरदर्शन की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। इस संचार-माध्यम ने आज लोगों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है। मानव जीवन में आये कई बदलाव जहाँ व्यापक रूप से लाभप्रद है, वहीं इससे कई हानियाँ भी दिखने लगी हैं।

सर्वप्रथम हम इसके लाभों पर विचार करें। दूरदर्शन एक ऐसा प्रभावी माध्यम है, जिससे कई लाभ उठाये जा सकते हैं। इसके माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। जनसंख्या-वृद्धि, स्वास्थ्य जैसी समस्याओं पर काबू पाने में टेलीविजन जितना मददगार साबित हुआ है, उतना कोई दूसरा माध्यम नहीं। भारतीय दूरदर्शन ने मद्यपान, नशीली दवाओं की लत, दहेज, छुआछूत, ऊँच-नीच, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं पर प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत करके जनजागरण किया है। पिछड़ी बस्तियों की समस्या, प्रौढ़ शिक्षा, वृक्षारोपण, प्रदूषण, नर-नारी समानता की भावना आदि अनेक मोर्चों पर दूरदर्शन ने सफलता हासिल की है।

Scanned with CamScanner

दूरदर्शन शिक्षा के प्रसार में भी अहम् भूमिका निभाता है। दूरदर्शन ने शैक्षिक कार्यक्रम कक्षाओं से भी कभी-कभी रोचक, ग्राह्य और ज्ञानवर्द्धक होते हैं। पाठयक्रम के अतिरिक्त अन्य सामाजिक विषयों और परीक्षाओं से संबंधित कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जाते हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि-संबंधी जानकारियों के लिए यह अति उत्तम साधन है। इसके माध्यम से नये-नये उद्योगों की जानकारियाँ देकर बेरोजगारी की समस्या से भी निबटा जा सकता है।

दूरदर्शन का एक प्रबल पक्ष है- मनोरंजन। टेलीफिल्में, धारावाहिक, वृत्तचित्र, नाटक, बच्चों के कार्यक्रम, कवि-सम्मेलन, मुशायरा, खेलकूद प्रतियोगिताओं आदि के द्वारा लोगों का भरपूर मनोरंजन होता है। दूरदर्शन पर प्रसारित विज्ञापनों से वाणिज्य-व्यापार को फैलाने में भी सुविधा होती है। विश्व के किसी हिस्से में घटनेवाली कोई भी घटना सचित्र और सजीव रूप में यदि हम देख पाते हैं तो इसमें दूरदर्शन की बड़ी भूमिका है। इस प्रकार सूचना (समाचार), मनोरंजन और शिक्षण की भूमिका दूरदर्शन एक साथ निभाता है।

दूरदर्शन से कुछ हानियाँ भी हैं। यहि व्यक्ति को पंगु बना देता है। घटनाओं की जानकारी तो दर्शक तक पहुँच जाती है, परंतु वह उनका वास्तविक अनुभव नहीं कर पाता। कार्यक्रम संबंधी सावधानी नहीं बरतने की वजह से दूरदर्शन के अपराधों की संख्या बढ़ाने में भी योगदान दियाँ है। दूरदर्शन से अत्यधिक चिपके रहने के कारण छात्रों की पढ़ाई भी चौपट होती है। आँखों पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है।

इन हानियों के बावजूद यह सच है कि जो कुछ भी दोष इसमें उत्पन्न हुए हैं, उनका समाधान किया जा सकता है। सुविचारित योजना के तहत अच्छे कार्यक्रम पेश किये जा सकते हैं। कुल मिलाकर यदि दूरदर्शन का समुचित उपयोग किया जाय तो यह सुदंर समाज की रचना में सबसे महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकता है।

प्र. 4 दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण आठ दिन के अवकाश के हेतु बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी नीलांशु की ओर से बी॰के॰ इंटर महाविद्यालय, गोड्डा के प्रधानाचार्य को एक आवेदन पत्र लिखिए- 5

अथवा

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें आपके द्वारा ग्रीष्मावकाश के दौरान किसी हिल-स्टेशन की यात्रा का विवरण हो। आपका नाम है - सुजाता।

उत्तर सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य

बी॰के॰ इंटर महाविद्यालय, गोड्डा

विषयः-आठ दिन के अवकाश हेतु आवेदन-पत्र

महाशय,

विनम्र निवेदन है कि मैं नीलांशु आपके महाविद्यालय के बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरा नामांक- 151 है। मैं विगत 16 जून को महाविद्यालय से घर जाने के क्रम में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मेरी साइकिल को एक कारवाले ने पीछे से धक्का मार दिया। इससे मैं सड़क पर ही गिर गया। मुझे हाथ-पाँव में काफी चोट आयी। मेरी साइकिल भी क्षतिग्रस्त हो गयी। मैं चलने-फिरने में कठिनाई का अनुभव कर रहा था। इस वजह से मैं 17 जून, 2008 से 23 जून, 2008 तक महाविद्यालय नहीं आ सका। इससे मेरी पढ़ाई भी बाधित हुई।

अतएव, आपसे अनुरोध है कि मुझे उक्त तिथियों के लिए आठ दिनों का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। इस कृपापूर्ण कष्ट के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

सादर!

आपका विश्वासी छात्र

Scanned with CamScanner

नीलांशु
कक्षा- 12 वीं
नामांक- 151
बी॰के॰ इंटर महाविद्यालय, गोड्डा
दिनांक- 24.06.2008

प्र. 5 बढ़ती महँगाई विषय पर एक रिपोर्ट लिखें।

उत्तर आजकल टी॰भी॰ में एक गाना प्रचलित है जिसे रघुवीर यादव ने सामूहिक रूप से गाया है। जिसकी बोल है - मेरे सेयाँ बहुते कमात है महँगाई डायन खाये जात है। सचमुच दिन प्रतिदिन महँगाई बढ़ती जा रही हैं। आज अनाज और अन्य खाद्य पदार्थ तो महँगा है ही पढ़ाई भी दिन प्रतिदिन महँगी होती जा रही हैं। आज जमीन महँगी होती जा रही है फ्लैट भी महँगा होता जा रहा है। निम्न और मध्यम वर्गीय परिवार के रहन सहन इसके कारण निम्न से निम्नतरऔर निम्नतम होते जो रहे हैं। महँगाई के कारण लोग सामूहिक रूप से आत्महत्या कर रहे हैं। इसे हम प्रतिदिन समाचार पत्र में पढ़ते हैं तथा दूरदर्शन में देखते हैं।

महँगाई से परिवार के प्रधान और गृहिणी प्रभावित हैं। बजट बनाकर चलना मुश्किल हो गया है। सूखा के प्रभाव के कारण महँगाई रूकने का नाम नहीं ले रही है।

केन्द्र सरकार और झारखंड सरकार इस सम्बन्ध में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। काला बाजारी, भ्रष्टाचार तथा सकारी कर्मचारी की मिली भगत से बखौफ बढ़ती महँगाई बेलगाम होती जा रही है।

सरकार को महँगाई पर रोक लगाने के लिए कोई ठोस कदम उठाना चाहिए। काला बाजारियों, भ्रष्ट व्यापारियों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के विरूद्ध सख्त एवं कारगर कदम उठाना चाहिए ताकि नकली अभाव पैदा करने वालों को सीख मिल सके और सामान्य जनता लाभान्वित हो सके।

अथवा

विद्यालयी शिक्षा के गिरते स्तर पर 250 शब्दों का एक आलेख लिखिए।

उत्तर अथवा

विद्यालयी शिक्षा का गिरता स्तर

विद्यालयी शिक्षा का स्तर दिनोंदिन चिंताजनक स्थिति में पहुँचता जा रहा है। विद्यालयी शिक्षा किसी भी देश के विकास में अहम भूमिका निभाता है, क्योंकि सही शिक्षा का मूल आधार है। लेकिन नींव ही यदि कमजोर पड़ जाय तो फिर भवन की मजबूती पर ही सवाल खड़े हो जाते हैं। परंतु इसकी मजबूती के लिए जो कदम उठाये जाने चाहिए थे, वे अब तक नहीं उठाये गये। खासकर प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में तो आजादी के बाद से ही प्रयोगों का सिलसिला चला आ रहा है। लगता है जैसे प्रारंभिक शिक्षा न होकर प्रयोगशाला हो। सरकारी स्तर पर किये जा रहे इन प्रयोगों का दुष्परिणाम ये हुआ है कि जब तक एक राह पर चलने के हम अभ्यस्त होते हैं तब फिर दूसरे रास्ते पर चलने के निर्देश-आदेश जारी कर दिये जाते हैं। इसका खामियाजा सबसे अधिक हमारे देश के नौनिहालों को झेलना पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा ही सिर्फ प्रयोगों के दौर से नहीं गुजर रही है, बलिक माध्यमिक शिक्षा भी इसके प्रभावों से अछूती नहीं है।

विद्यालयी शिक्षा के गिरते स्तर के लिए कई कारण जिम्मेवार हैं, इनमें प्रमुख हैं- सरकारी उदासीनता, जन जागृति का अभाव, शिक्षा नीति में अनावश्यक छेड़छाड़, शिक्षक प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था का नहीं होना। शिक्षको को गैर- शैक्षिक कार्यो में लगाया जाना आदि। इतना ही नहीं पाठ्यक्रम का देशकाल के अनुरूप नहीं होना भी विद्यालयी शिक्षा के

Scanned with CamScanner

गिरते स्तर के लिए जिम्मेवार है। शिक्षकों के चयन की प्रणाली भी इतनी दोषपूर्ण है कि योग्यता पर पैरवी हावी हो जाती है और इसका खामियाजा देश के नौनिहाल भुगतते हैं। शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ इसकी गुणवत्ता पर ध्यान दिये जाने की जरूरत है लेकिन उस ओर से सब उदासीन हैं।

आमतौर पहले सातवीं पास लोग भी पत्र-आवेदन आदि ठीक-ठाक किया करते थे। परंतु अब देखने पर में ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या ऐसी भी है जो चिट्ठी-पत्री नहीं लिख पाती। ऐसा नहीं है कि विद्यालयी शिक्षा का स्तर एक ही दिन में गिरा है, यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है। प्राथमिक शिक्षा के साथ सबसे ज्यादा खिलवाड़ शासन-व्यवस्था के लोगों ने किया है। सरकारी स्तर पर हर पाँच-दस वर्ष के बाद प्राथमिक शिक्षा की पद्धति में बदलाव किया गया। कभी व्यस्क शिक्षा की पद्धति में बदलाव किया गया। कभी व्यस्क एवं सतंत् शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, सर्वशिक्षा अभियान, आदि चलाकर प्राथमिक शिक्षा को कथित गति देने का प्रयास किया गया। इस क्रम में कोठारी आयोग के मूलभूत सुझावों को ही अमल में नहीं लाया गया। एक प्रमुख सुझाव कि अपने पड़ोस (जहाँ बच्चे के अभिभावक निवास करते हैं) के विद्यालय में ही सभी बच्चे जायँ, जो कॉमन स्कूल सिस्टम' की अवधारणा को आगे बढ़ाएँ, को अब तक फाइलों में ही दबाकर नौकरशाहों ने रखा हुआ है। दरअसल, जो तबका ऊँचे ओहदों तक पहुँच चुका है। वह नहीं चाहता है कि उसके बच्चों को ज्यादा प्रतियोगिता का सामना न करना पड़े।

विद्यालयी शिक्षा के गिरते स्तर को थामने के लिए व्यापक और संपूर्ण ईमानदार नीति बनाने और उस पर अमल करने की जरूरत है। इस मुद्दे पर बुद्धिजीवियों, दबाव समूहों और स्वयंसेवी संस्थाओं को मिलकर काम करना होगा।

प्र. 6 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर फीचर तैयार कीजिए- 5

झारखंड के किसानों की समस्या

अथवा

आत्मनिर्भरता का महत्व

उत्तर झारखंड के किसानः समस्याओं के भँवर में

कभी राष्ट्रपिता ने कहा था- 'भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता हैं, सृष्टिपालक हैं। पर आज परिश्रम के ये अवतार नगरवासियों के ये अन्नदाता और सृष्टिपालक आज स्वयं भूखे हैं। दुनिया-भर का पेट भर कर भी ये अपने लिए अन्न नहीं जुटा पा रहे। भूख, गरीबी, फटेहाली उसके संगी-साथी बन रहे हैं। प्रेमंचद की 'पूस की रात' कहानी का हल्कू पहले भले ही अपवाद रहा हो पर अब तो हल्कुओं की लाइन लग गयी है। जो किसानी छोड़कर दिहाड़ी मजदूर बन जाना पंसद कर रहे हैं। घर के नाम पर किसानों के पास अमूमन झोंपड़ी है, जिसमें वह सर्दी, गरमी, वर्षा की मार झेलता है। इस स्थिति के काव्य-पंक्तियाँ ज्यादा खोलती हैं-

हैं घास -फूस की झोंपड़ियाँ इनमें जीवन चलता है।
दिन-रात परिश्रम में पिसता टुकड़ों में मानव पलता है।

किसानों की इस अवस्था के लिए एक साथ ही कई कारण जिम्मेवार हैं। अशिक्षा, साहूकारों-सूदखारों का मकड़जाल उपज का उचित मूल्य न मिलना जैसे कई कारण हैं। अशिक्षा वह बाधा है जो नयी तकनीक और अधिकारों तक पहुँचने नहीं देता। परिणाम पैदावार में कमी। पैदावार में कमी उन्हें साहूकारों, सूदखोरों के चंगुल में डाल देती है। अपने सामान्य

Scanned with CamScanner

खर्च भी एक छोटा किसान नहीं उठा पाता और वह महाजनी के जाल में फँस जाता है। यही नहीं सरकारी उदासीनता कोढ़ में खाज का काम करती है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य न बाजार देता है न ही सरकार देती है। सरकार द्वारा उचित समर्थन मूल्य नहीं मिलना भी उन्हें खेती से मुख मोड़ने पर विवश कर देता है। यही तो आश्चर्य की वात भी है कि शहरों को पालनेवाला किसान गाँवों में अपनी फटेहाली के आँसू वहा रहा है। किसानों के मध्य कोई संगठन नहीं है, जिससे वे उपलब्ध सरकारी सुविधाओं का लाभ उठा पाने से भी वंचित हैं। किसानों के बीच व्याप्त अंधविश्वास भी उनकी प्रगति में बहुत बड़ा बाधक है। झारखंड के किसानों की स्थिति तो और भी चिंताजनक है। ये प्रकृति और सरकार दोनों की ही मार झेल रहे हैं। प्रकृति इन्हें समय पर बारिश से वंचित करती है तो सरकार सिर्फ औद्योगिक विकास पर ही ध्यान देती है। हर दिन आसपास के गाँवों से हजारों लोग दिहाड़ी मजदूरी करने शहर आते हैं। इन स्थितियों में क्या यह कहा जा सकता है कि ये अन्नदाता और सृष्टि-पालक तब तक किसान से मजदूर बनते रहेंगे, जब तक ये सरकारी प्रशासनिक उदासीनता के मारे रहेंगे।

इधर अपने देश की सरकार ने किसानों के कर्जों की माफी की घोषणा की है, पर ये बड़े किसानों को ही फायदा पहुँचानेवाली कार्यवाही है। छोटे किसान बेचारे महाजनों के शिकार बनते हैं, जिसके लिए सरकार की कोई नीति ही नहीं। जब तक छोटे जोतवाले किसानों को मदद की मुकम्मल नीति नहीं बनेगी और उस पर अमल नहीं होगा, तक तक किसान मजदूर बनते रहेंगे। मीडिया आज प्रभावी भूमिका में है, परन्तु वह भी किसानों की समस्याओं से मुख मोड़े हुए है।

खंड - 'ग'

प्र. 7 निम्नलिखित काव्यांशो के आधार पर दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखें - 2+2+2+2=8

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक घर देनेके माने
बच्चा ही जाने।

(क) उपर्युक्त काव्यांश ने कवि ने कविता को किस रूप में प्रस्तुत किया है?
(ख) कविता और खेल में क्या समानता है ?
(ग) कविता की सीमा क्या है?
(घ) 'कविता के बहाने' कविता के कवि कौन है?

उत्तर (क) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने कविता को खेल के रूप में प्रस्तुत किया है।

(ख) बच्चों के खेल की तरह कविता शब्दों का खेल है। बच्चें के खेल में किसी प्रकार की सीमा नहीं होती, उसी प्रकार शब्दों के खेल कविता की भी कोई समानता नहीं होती।

(ग) कविता की सीमा अनंत और असीम है।

(घ) 'कविता के बहाने' कविता के कवि कुंवर नारायण हैं।

अथवा

तिरछी है समीर सागर पर
अस्थित सुख पर दुख की छाया

Scanned with CamScanner

जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया
यह तेरे रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से।

(क) उपर्युक्त काव्यांश किस रचना की है?
(ख) इस अंश के कवि कौन हैं ?
(ग) इसमें कवि ने बादलों के किस रूप का चित्रण किया है?
(घ) इसमें कवि ने बादलों के का क्या किया है?

उत्तर (क) यह काव्यांश 'बादल राग' कविता का है।
(ख) इस काव्यांश के कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी है।
(ग) इसमें कवि ने बादलों के क्रान्तिकारी रूप का चित्रण किया है।
(घ) इसमें बादल का मानवीकरण किया गया है।

प्र. 8 निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्याशों का सौंदर्य-बोध निर्दिष्ट कीजिए- 3+3=6

(क) तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुंरत।
अस कहि आयसु पाई पद बंदि चलेऊ हनुमंत।।
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराइत पुनि पुनि पवन कुमार

(ख) बहु काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो

(ग) हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे।
एक बंद कमरे में

उत्तर (क) प्रस्तुत काव्यांश में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने की घटना का वर्णन किया है। 'पुनि-पुनि' में पुनरुक्तिप्रकाश अंलकार है। अनुप्रास की छटा सभी पंक्तियों में दर्शनीय है। अवधी भाषा और दोहा छंद में रचित ये पंक्तियाँ गेयता और संगीतात्मकता के गुणों से संपन्न हैं।

(ख) कविवर शमशेर बहादुर सिंह ने बताया है कि जिस प्रकार काली सिल पर थोड़ा-सा केसर डाल देने से उसका कालापन समाप्त हो जाता है, उसी भाँति सूर्योदय होता ही हर वस्तु चमकने लगती है। उत्प्रेक्षा अलंकार इनमें विद्यमान है। साहित्यिक खड़ी बोली में रचित इन पंक्तियों में नये उपमानों -काली सिल, लाल केसर- का प्रयोग हुआ है। मुक्त छंद की इन पंक्तियों से निर्मित शब्द चित्र प्रसंगनीय हो।

प्र. 9 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए:- 2+2=4

(क) छोटे पौधे बादल की भयंकर गर्जना सुनकर भी क्यों हँसते हैं?

(ख) भाई के शोक में डूबे राम के विलाप में नारी के प्रति राम का क्या दृष्टिकोण प्रकट हुआ है?

(ग) 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर (क) छोटे पौधे बादल की भयंकर गर्जना से भयभीत नही होते वल्कि वे हँसते हैं। उसे मालूम है कि बादल धरती पर वर्षा प्रदान करेंगे जिससे उसे (पौधे को) नया जीवन प्राप्त होगा जिससे वे हरे-भरे और ऊँचे होंगे।

Scanned with CamScanner

(ख) लक्ष्मण को शक्तिवाण लगने के कारण मूर्च्छित हो जाने पर राम विलाप करते हैं। उस विलाप में नारी के प्रति राम का संकुचित विचार प्रकट होता है। राम सामान्य लागों की तरह भाई लक्ष्मण की तुलना मे पत्नी सीता का कम महत्त्व देते हैं। वे पत्नी की हानि को उतना महत्त्व नहीं देते जितना महत्त्व भाई लक्षमण की हानि को देते है। उनकी दृष्टि में सहोदर भाई दुबारा नहीं मिलता, पत्नी तो दुबारा भी मिल जा सकती है।

प्र.10 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **2+2+2+2=8**

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी- "धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना।" मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्वल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निंरतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख वचा जाएँगे। भोले हैं, वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किये रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

(क) तुलसीदास ने किस सच्चाई पर मुहर लगाई थी?

(ख) शिरीष के फूल देखकर लेखक क्या सोचता है?

(ग) जीवन के बारे में लेखक क्या कहना चाहता है?

(घ) पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।

अथवा

वे सचमुच ऐसे दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के तपतपा बीत कर आषाढ़ का पहला पखवारा वीत चुका होता पर क्षितिज पर कहीं बादल की रेखा भी नहीं दिखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को भी मानों खौलता हुआ पानी हो। शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब होती थी। जहाँ जुताई होनी चाहिए, वहाँ खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती, फिर उसमें पपड़ी पड़ कर जमीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी आधे रास्ते में लू खाकर गिर पड़े। ढोर-ढँगर प्यास के मारे मरने लगते, लेकिन बारिश का कहीं नाम निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा विधान सव करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना। वर्षा के बादलों के स्वामी हैं इंद्र और इंद्र की सेना टोली बाँध कर कीचड़ में लथपथ निकलती, पुकारते हुए मेघों को, पानी माँगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए।

(क) आषाढ़ में कैसा मौसम हो जाता था?

(ख) गाँव की हालत के बारे में लेखक क्या कहता है?

(ग) गाँवों में इंदर सेना क्या करती है?

(घ) पाठ तथा लेखक का नाम बताइए?

उत्तर (क) तुलसीदासजी ने बताया कि संसार के अतिपरिचित सत्य- वृद्धावस्था और मृत्यु हैं। जो भी इस धरती पर आया है उसे एक दिन यहाँ से जाना ही है।

(ख) शिरीष के फूल को देखकर लेखक सोचता है कि संसार में कोई अमर नहीं है, जो व्यक्ति जम जाता है, उसका जल्दी ही नाश हो जाता है। अतएव, चलते रहना ही जीवन

Scanned with CamScanner

है।

(ग) जीवन के बारे में लेखक का कहना है कि मृत्यु निश्चित है। महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहा है। जो हिलते-डुलते रहते हैं, वे कुछ अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं।

(घ) पाठ का नाम- शिरीष के फूल तथा लेखक का नाम - हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

प्र. 11 निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 3+3+3+3=12

(क) भक्तिन के जेठ-जिठौतों का क्या लालच था? यह उन्हें क्या जवाब देती थी?

(ख) बाजार-दर्शन से क्या अभिप्राय है? पठित पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ग) गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

(घ) लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों गाँधी और नेहरू ने भी इसके सान्निधकरण चाहा?

(ङ॰) डॉ॰ अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते है? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर (क) भक्तिन ने अपने पति के असमय गुजरने के बाद जायदाद की जिम्मेदारी संभाली। उसके हरे-भरे खेत, मोटी-ताजी गाय-भैसें तथा फलों से लदे पेड़ देखकर जेठ-जेठानी के मुहँ में पानी भर आता। ये सब उन्हें तभी मिल सकते थे, जब वह दूसरा ब्याह कर ले। भक्तिन ने उनकी लालच के बारे में जानकर गुस्से में कहा कि हम कुत्ते-बिल्ली नहीं कि हमारा मन पसीज जाए। हम दूसरे के यहाँ नहीं जाएँगी। हम तुम्हारी छाती पर ही होरहा दलेंगी और राज करेंगी। उसने किसी को एक सुई की नोंक के बराबर भी जमीन नहीं दी।

(ख) लेखक जैनेन्द्र कुमार ने 'बाजार दर्शन' में बाजार के बारे में सटीक टिप्पणी की है। उन्होंने बताया है कि बाजार दर्शन से अभिप्राय है- बाजार के बारे में बताना। दूसरे शब्दों में बाजार में कौन-कौन सी वस्तुएँ मिलती हैं? बाजार लोगों को कैसे और क्यों आकर्षित करता है? बाजार के आकर्षण से कैसे बचा जा सकता है? आदि बातों को लेखक ने विस्तारपूर्वक और रोचक अदांज में बताया है। लेखक ने बाजार के प्रति अत्यधिक आकर्षण को सामाजिक सद्भावना के लिए भी घातक बताया है।

(घ) गाँव में महामारी फैलने की वजह से लुट्टन के दोनों लड़के असमय काल के गाल में समा गए। अपने बेटों की मौत के बाद भी लुट्टन पहलवान ढोल बजाता रहा। ढोल की आवाज लोगों में जीन की इच्छा जगाती थी। पहलवान की यही इच्छा थी कि गाँव के व्यक्ति महामारी की विभीषिका से घबरा न जाएँ। इसी वजह से वह ढोल बजाता रहता था। वह गाँववालों की जिजीविषा बनाये रखना चाहता था तथा उन्हें जीने की कला सिखाना चाहता था।

(ङ) डॉ॰ अंबेडकर की मान्यता है कि शारीरिक वंश-परंपरा तथा सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्य में असमानता हो सकती है, इसलिए वे समानता को व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति को आरंभ से ही समान अवसर व समान व्यवहार मिलना चाहिए तभी समाज का उचित विकास हो सकता है। वे कहते हैं कि उत्तम कुल, शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक, संपदा आदि का लाभ उच्च वर्ग को मिलता है।

प्र.12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 3+3+3=9

(क) यशोधर के पुत्र भूषण के विषय में पठित पाठ के आधार पर बताइए।

(ख) खेतों पर आंनदा क्या कार्य करता था?

Scanned with CamScanner

(ग) मोहनजोदडो की नगर योजना पर टिप्पणी कीजिए।

(घ) अज्ञातवास में उबाऊपन दूर करने के लिए फ्रैंक तथा वान परिवार क्या करता था?

उत्तर (क) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी का भूषण यशोधर का सबसे बड़ा पुत्र है। वह अपने पिता की तरह सिद्धांतवादी नहीं है। वह एक प्राइवेट विज्ञापन कंपनी में काम करता है। उसकी मासिक तनख्वाह 1500 रुपये है। वह कल्पनाशील है इसलिए उसकी इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। अन्य युवकों की तरह वह भी ज्यादा पैसा कमाना चाहता है। वह साधारण युवक है पर उसे 1500 रुपये की असाधारण नौकरी मिल जाती है।

(ख) आंनदा पढ़ाई-लिखाई शुरू करने के बाद और पहले भी खेतों पर काम करता था। वह सारे दिन खेतों पर निराई-गुड़ाई का काम करता था। वह फसलों की रक्षा करता था। ईख-पेरने के लिए वह कोल्हू भी चलाता था। इसके अलावा आंनदा को भैंसें भी चरानी होती थी। इन कामों को करने के बाद भी उसे अपने पिता की डाँट खानी पड़ती थी। सच पूछें तो उसका जीवन बेहद संघषपूर्ण उतार-चढ़ावों से भरा था।

(घ) ऐन फ्रैंक की डायरी के मुताबिक फ्रैंक तथा वान परिवारों के सभी सदस्यों को एक लंबे समय तक सीमित कमरों में ही रहना था। इसलिए वे सब यही सोचकर बोर हो जाते थे। इन बोरियत भरे पलों को दूर करने के लिए वे हर वक्त उल-जलूल हकरतें करते रहते थे। कभी पहेलियाँ बुझाते थे तो कभी अंधेरे में ही व्यायाम करते थे। वे दूरबीन लगाकर पडोसी के कमरों में भी ताक-झाँक करते थे।

प्र.13 अद्योलिखित प्रश्नों में से दो के उत्तर कीजिए- 3+3=6

(क) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। क्यों?

(ख) कक्षा में आंनदा का आत्मविश्वास कैसे बढ़ा।

(ग) मोहनजोदड़ों की गृहनिर्माण योजना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर (क) यशोधर बाबू की पत्नी व्यवहारवादी हैं, वह समय को अच्छी तरह पहचानती है। वह बच्चों की सहानुभूति पाने के लिए उनके मन के मुताबिक काम करती है। उनका मानना है आदमी को समय के अनुसार ढलना चाहिए। दूसरी तरफ यशोधर बाबू सिद्धांतवादी है। वे अपने सिद्धांतों के कारण परिवार के अन्य सदस्यों से मेल नहीं बिठा पाते। इस वजह से वह उपेक्षित भी हो जाते हैं।

(ग) लेखक ने यात्रा-क्रम में मोहनजोदड़ो के घरों का निरीक्षण किया और पाया कि सामने की दीवार में केवल प्रवेश द्वार होते है। इसमें कोई खिड़की नहीं है। ऐसा लगता है कि खिड़कियाँ शायद ऊपरी दीवारों पर बनायी जाती होंगी। बड़े घरों के अंदर के आँगन के चारों तरफ बने कमरों में बहुत खिड़कियाँ है। जिन घरों में बड़े आँगनथे, वहाँ कुछ काम किये जाने की संभावना जतायी गयी है।

प्र. 14 'इन कविताओं के साथ खेलते हुए मुझे दो बड़ी शक्तियाँ प्राप्त हुई.......' 'जूझ' के लेखक ने किन दो शक्तियों का उल्लेख ऐसा कहने के बाद किया है? 5

अथवा

यशोधर बाबू ने परलोक के बारे में सोचना क्यों शुरू कर दिया? प्रवचन सुनने में उनका मन फिर क्यों नहीं लगता?

उत्तर 'जूझ' के लेखक अनंत यादव ने कविताओं के साथ खेलते हुए दो बड़ी शक्तियों के प्राप्त होने का उल्लेख किया है। ये दो शक्तियाँ थीं- अकेलापन अच्छा लगना और, गायन-क्षमता का विकास।

Scanned with CamScanner

लेखक के अनुसार, पहले ढोर चलते हुए, पानी लगाते हुए, दूसरे काम कते हुए अकेलापन बहुत खटकता था। किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हँसी-मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था- हमेशा कोई-न-कोई साथ में होना चाहिए, ऐसा लगता था। लेकिन अब, कविता से गहरे आत्मीय, अंतरंग परिचय के बाद, अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती। बल्कि परिवर्तन यह आया कि अब अकेलापन ज्यादा अच्छा लगने लगा।

लेखक अकेले में कविता का गायन कर सकता था। वह जितना अकेला होगा, जितनी देर अकेला होगा, उतना खुलकर कविताओं का गायन कर सकेगा। अंनत काणेकर की एक कविता का गायन उसने मास्टर द्वारा सिखाए गए तरीके से अलग, अपने ढंग से किया। मास्टर से ज्यादा भावपूर्ण ढंग से गाकर उसने सुख का अनुभव किया। मास्टरजी को उसका प्रयास अच्छा लगा। उन्होनें छठी-सातवीं के कक्षा के सभी लड़कों के सामने गाने के लिए कहा। पाठशाला के एक समारोह में भी उसने यह कविता गाकर सुनाई।

लेखक ने महसूस किया कि उसके कुछ नए पंख निकल आए हैं। ये नए पंख नयी शक्तियों के विकास की ओर संकेत करते हैं।

Scanned with CamScanner